

(२०)

ॐ आरती हस्तात्रेय प्रभुनी ॐ

जय जय जय गुरुदेव !	
वन्दे अत्रिकुमारं	त्रिभुवनलतारिम् (२)
ननिभृतिस्मृतपात्रं	तापत्रयहारम्
	जय जय जय गुरुदेव ! ध्रु०
कुरुषु पारावारं	योगिजनाधारम् (२)
दृगम्बवज्रलनिधिपारं	षडदर्शनसारम्-जय जय० १
सोगापवर्गद्वारं	द्वृतभेदासारम् (२)
नतजनवरदातारं	निगमागमसारम्-जय जय० २
ध्रुतगलभौकितहारं	कीर्णुण्टासारम् (२)
धामना निर्गतमारं	षडरियुक्तहारम्-जय जय० ३
दुःशीलातिकरालं	भस्मांकितलासम् (२)
शंभु-त्रिशुल-साजन-स्रग्वाधारिकरम्-जय०	४
कलिकदम्बधन्तारं	सुरनरमुनितारम् (२)
वृत्तविजनेकविहारं	शक्ति सुधाहारम्-जय जय० ५
देवत्रयावतारं	शांति शांति सुधागारम् (२)
द्वरीद्वृतनतलारं	रंगारंग करम्-जय जय० ६

(१७)

ॐ चिन्तन प्रार्थना ॐ

यह प्रार्थना हमसे जने-प्रभु गार्थेजे तेरा जन्म ।
भारग सिधा हो अत्यका-हो अक्षरूप मे स्थिर मन ॥
परमार्थका यह लक्ष भी (निज स्वार्थ) से अदकर रहे ।
उद्देश सभका हो सकल नित ज्ञान की गंगा अछे ॥१॥
नर जन्म हमको है मिला-जण सतगुरु का ध्यान हो ।
आध्यात्मकी लहरे पीवे-नित सत का सन्मान हो ॥
शुभ आचरण शुभ कर्म हो संसारमे सुख हो सदा ।
दुःख ली कली सहना पडे हो दुरमनीसे हम गुदा ॥२॥
ना बोधकी हो भावना अद्वैत हमको कीलये
ॐकार सोडह अक्षरी-सेवा इयामय दीलये ॥
संदेहकाना गंध हो-मनकी पुरार्थ दुरकर ।
विधनाथ कहेता हे प्रभो-दरपा करो जण उपर ॥३॥

ॐ ॐ